International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

हिन्दी साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

स्वीटी गुप्ता
सह अध्यापिका,
हिन्दी विभाग
जनता महाविद्यालय, चरखी दादरी

लोकोक्ति तो भाषा–साहित्य की परंपरा से भाषा का काव्य शास्त्र तक तथा अलंकारवाद प्राप्त कर चुकी है। कहावतें भी लोकोक्ति के अंतर्गत आ जाती है। लोकोक्तियाँ लोकजीवन के खट्ठे–मीठे विस्तृत अनुभवों को जन–सामान्य के शब्दों के माध्यम से व्यक्ति करती हैं। वास्तव में लोकाक्तियाँ भाषा का श्रंगार हैं। ये लोकप्रिय हैं तथा लोक जीवन में संर्वकालीन प्रणाणिक एवं सच्ची हैं। आज भी लोकोक्तियों की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है। वर्तमान युग में इनका महत्व बढ़ गया है। हर देश में हर काल में लोकोक्तियों की रचनाएँ हुई हैं, जिनके शब्दों में जन–सामान्य पर जादू का सा असर किया। इस परंपरा में हमारा लोक जीवन अधिक समृद्ध रहा है। घोर निराशान्धकार में भी आशा–दीप बनकर जीवन को प्रकाशमान करने वाली ये लोकोक्तियाँआज के तनाववयुक्त युग में जी रहे मनुष्य के लिए शीतलता प्रदान करती हैं। दुविधा या कठिनाई में पड़ा मनुष्य इन लोकोक्तियों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन की चक्करदार गलियों में भी सही गली चुन सकता है। डॉ प्रताप अनम के शब्दों में ''लोकोक्तियाँ इतनी खाटी और भदेश होती हैं कि सुनने वाले के भीतर तक उतरती चली आती हैं। इनमें बोलने के साथ ही दुश्यचित्र को साकार कर देने की अपार क्षमता होती है। कहावतें व लोकोक्तियाँ आपकी भाषा को सजा–सँवारकार संस्कार भेंट करती हैं।''[i]

लोकोक्तियाँ लोकजीवन में अनादिकाल में समाती चली आई हैं और आगे भी यह क्रम निरंतर जारी रहने वाला है। ये अत्यंत आकर्षक, चुटीली और अर्थपूर्ण होती हैं। इसमें आपकी शैली प्रभावोत्पादक बन जाती है और आपके विचार भी मूलयवत्ता से परिपूर्ण हो जाते हैं। डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद के शब्दों में ''लोकक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब लोकोक्ति हो जाती है।[ii] डॉ. आर. एन. गौड़ की वाणी में भाषा में रोचकता और प्रवाह लाने के लिए बीच–बीच में लोकोक्तियाँ मुहावरों और अलंकारों का प्रयोग होना चाहिए। सुन्दर–सुन्दर शब्दों के प्रयोग से शैली आकर्षक बन जाती है।[iii] उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि लोकोक्ति लोक जीवन का आधार ही नहीं भाषा शैली का श्रंगार भी है। लोकोक्तियाँ तो बहुत हैं पर लोकजीवन में प्रयोग की जाने वाली लोकसिद्ध लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं–

कबीर तू कबसे बैरागी ? हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और, एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया युग गई खेत, मन चंगा तो कठौती में गंगा, शेर का डर नहीं जितना टपके का, चार ललट्ठ के चौधरी, पांच लट्ठ के पंच, जिसकी लाठी उसकी भैंस सबै दिन होत न एक समान, पराधीन सुख सपनेहू नाहि, दैव–दैव आसली पुकारा, जहाँ चाह वहाँ राह, होनकार वीरवान के होत चिकतने पात, न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी, अंधा पीसे कुत्ता खाए, बिल्ली खायेगी नहीं तो गिरा तो देगी ही, अंधेर नगरी चौपट राजा, जिसको न दै मोला उसको क्या देगा आसफ अद्यौला, बगल में लड़का शहर में ढ़िंढ़ोरा, गरीब की जोरू सबकी भाभी, सबकी भौजाई, या अल्लाह गौड़ में भी गौड़,। अंगूर खट्टे हैं,

उतने पैर पसारिण जितनी लंबी सौर, अन्धों में काना राजा, अंधा न राम, माया मेरे तीन नाम–परस, परसा, परसुराम, बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी। सकल तीर्थ कर आई तुमड़िया तो भी न गई तिताई, नाच न जाने आँगन टेढ़ा, आग लगन्ते झोपड़ा जो निकले सो लाभ, आँख का अंधा नाम नयन सुख, घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध, धोबी का कुता न घर का न घाट का इत्यादि।

कबीर, घाघ, रहीम, तुलसी की कविताओं में लोकप्रिय लोकोक्तियाँ पायी जाती हैं जो लोकजीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। आछे दिन पाछे गये हरि सौ कियो न हैत, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत, नामक लोकोक्ति का मतलब है कि जब चिड़िया ने खेत को चुग लिया, फिर दुख करने का क्या लाभ ? तात्पर्य यह है कि काल रूपी चिड़िया जीवन के बहुमूल्य क्षणों रूपी कणों को खाती रहती है उस समय तो मनुष्य कुछ विचार नहीं करता न उसकी सुरक्षा का कोई प्रयास ही करता। जब कुछ भी पास नहीं रहता अंतिम सांस गिनने का वक्त आ जाता है त बवह जागता है और पश्चाताप करता है। पराजय की ओर लुढ़कता है। आत्म हिंसा की गति प्राप्त करता है इस आशय का द्योतक यह लोकोक्ति है।

कबीरा तू कबसे वैरागी ? अर्थात् आज तू मेरा गुरू है। रामान्द के बहुभाषा शिष्य बहूपमा के सहारे तत्व की बात कहकर कबीर ने शास्त्रार्थ में जब विद्वानों को परास्त कर दिया तो कबीरा के पास आकर रामानंद खड़े हो गए और उन्हे ध्यान से देखने लगे। कबीर जैसे ही रामानंद के पैर छूने के लिए झुके तो रामानंद ने रोक कर पूछा ''कबीरा तू कब से बैरागी'' अर्थात् आज से तू मेरा गुरू है। इस आशय को यह लोकोक्ति द्योतिक करती है।

मानव स्वाभाव प्रतिशोधपूर्ण होता है। इस स्थिति से ऊँचा उठने के लिए कबीर ने कहा ''जो तोको कांटा बुवै ताहि बोय तू फूल, तोको फूल के फूल है, बांकी है तिरसूल'' अर्थात् जो तुम्हारा अहित करता है, तुम उसका हित करों। जो तुम्हे दुख देता है, तुम उसे सुख दो। जो तुमसे द्वेष करता है उससे प्रेम करो, जो तुम्हे हानि पहँचा रहा है, तुम उसे लाभ पहुँचाओ, जो तुम्हें गिरा रहा है, तुम उसे उठाओ। निःसंदेह एक दिन ऐसा आयेगा कि वह अपने धूर्त्तता पूर्ण कुकृत्यों को छोड़कर आपका प्रशंसक बन जाएगा।

संत महाकति सदगुरू रैदास ने पंडित से कहा था ''जो मन चंगा तो कठौती में गंगा।'' जब पंडित को कांशी महाराज ने अपनी रानी के लिए कंगन के जोड़े का दूसरा कंगन लाने के कहा तो पंडित परेशानी में पड़ गया। काशी नरेश ने यह भी खबर भेजाई कि यदि पंडित ने कंगन लाकर नहीं दिया तो घर जप्त कराकर देश निकाला दे देगा। पंडित रोता हुआ रैदास के पास पहुँचा। उन्होने संत रैदास से कहा ''रैदास जी मुझे माफ कर दो। मेरी जान बचा लो गंगा जी ने उसके जोड़ी का दूसरा कंगन लाकर दे दो एक लाख रूपया ले लो। एक लाख रूपये उस कंगन के भी मिलेंगे।''[iv] संत रैदास ने विनय पूर्वक कहा ''महाराज मेरी जीविका तो जूते गांठने में निकल आती है और गंगा जाने को मेरे पास समय नहीं है। फिर मेरी इच्छा है आपका काम हो जाय।'' स्वयं संत महाकति ने इस प्रसंग का निरूपण अपने पदां में भी किया। रैदास ने अपनी कठौती का अंगोछा फैलाकर ढँक लिया और बोले ''जो मन चँगा तो कठौती में गंगा।'' अंगोछा हटाते ही उसमें पहले की तरह एक अत्यन्त आकर्षक सोने का कंगन दिखाई दिया रैदास ने कंगन निकालकर पंडित को दिया। पंडित को संतत्व के बल पर चिन्ता मुक्त किया। इस लोकोक्ति का आशय है कि मन साफ होने पर घर पर ही सारा तीर्थ है। परम तत्व व परम पुरूष का जगत अन्तर्जगत है, आत्मजगत है। बहिर्जगत में परम पुरूष की खोज अज्ञानता है। कुछ लोग गंगा स्नान करके भी मोहमाया नहीं छोड़ते और समझते हैं कि वे पवित्र हो गये। इसके विपरीत यह कहना ठीक है–''मन चंगा तो कठौती में गंगा।''

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'' का अर्थ है कि हार का संबंध शरीर से नहीं, मन से होता है। म नही समस्त सफलताओं की कुँजी है। राजा बुश को उस मकड़े से शिक्षा मिली जो सत्रह बार स्वयं निर्मित जाले के धागे से ऊपर चढ़ने के क्रम में नीचे गिरा था, पर उसने हार नहीं मानी। तात्पर्य यह है कि असफल तो वे होते हैं जो हिम्मत हार बैठते हैं। अतः हमें अपने जीवन में कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हिम्मत और हौसला नहीं खोना चाहिए।

संसार परिवर्तनशील है। इस क्षणभंगुर संसार में किसी के दिन एक समान नहीं होते। इस आशय की लोकोक्ति है, सबै दिन होत न एक समान तात्पर्य यह है कि कल की सधवा को आज विधवा बनते देर नहीं लगी। कल का राजा आज देखते–देखते भिखारी बन जाता है। सुख–दुख की धूप छाया में संसार उठता बैठता है। भगवान राम को चौदह वर्ष का महारण्यावास, सत्यहरिशचन्द्र को डोम के घर का दास बनना नल और दमयन्ती का जंगलों में मारे–मारे फिरना आदि सारी घटनाएँ परिवर्तन की निष्ठुरता की याद दिलाती है।

उस नगरी में नहीं रहना चाहिए जहाँ के राजा गुण्ज्ञ व्यक्ति का सम्मान नहीं करते। इस भाव की द्योतक लोकोक्ति है ''अंधेर नगरी चौपट राजा'' टके सेर भाजी, टके सेर खाजा। एक गुरू का चेला अंधेर नगरी के राजा के फेरे में पड़ गया। राजा ने उसे फाँसी की सजा सुनायी। गुरू ने बुद्धिमत्ता से चेले को फाँसी से बचा लिया। गुरू ने राजा से कहा कि इस मुहुर्त्त में जो मरेगा, उसे स्वर्ग मिलेगा। राजा के मन में स्वर्ग पाने की लालसा जागी और राजा ने स्वयं फाँसी लगा ली। शिष्य के प्राण की रक्षा हुई। गुरू ने चेले के कान में कहा ''देख लिख.....अंधेर नगरी और यहां के लोगों को। निकल चलो जल्दी से चुपचाप यह सुनकर शिष्य गुरू के पीछे चला गया। इसके बाद जब भी इस नगरी के बारे में जिक्र किया जाता है तो गुरू अपनी अमृतवाणी को कहने से नहीं चुकते थे ''अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।''

होनहार वीरवान के होत चिकने पात अर्थात् होनहार के लक्षण पहले से ही दिखलायी पड़ने लगते हैं। वह लड़का जैसा सुन्दर है, वैसा ही सुशील और जो जैसा समझदार है वैसा ही तेजस्वी। अबोध बालक है कि पर भाषा और गणित में उसकी अच्छी पैठ है। अभी देखने पर स्पष्ट मालूम पड़ता है कि समय पर वह प्रख्यात विद्वान होगा। कहावत भी है ''होनदार वीरवान के होते चिकने पात''।

''अन्धों में काना राजा'' का मतलब है कि मूर्खों में कुछ पढ़ा–लिखा व्यक्ति। मेरे गाँव में कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति तो है नहीं, इसलिए गांव वाले पंडित दीनानाथ को ही सब कुछ समझते हैं। ठीक ही कहा गया है–''अन्धों में काना राजा''।

राजा योगी किसके मीत ''राजा और फकीर प्रेम रहित होते हैं। दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम'' एक साथ दो काम करने पर सफलता एक में भी नहीं।

''चाँद को ग्रहण लगता है'' अर्थात् सज्ज्न को भी धब्बा लगता है। तलवार से ज्यादा धार कलम में है, अर्थात् कलम से ज्यादा शक्तिशाली तलवार नहीं होती। ''हाथी चले बाजार कुत्ता भौंके हजार'' अर्थात् हाथी अपने रास्ता चलता है कुत्ते भौंकते हैं तो उन्हे भौंकने दो। जो नाविक अपनी यात्रा के अंतिम बंदरगाह को नहीं जानता उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बनती।

''जिसके पास लोई उसका सब कोई'' अर्थात् धनवान की सब खुशामद करते हैं। ''अन्धी पीसे कुत्ता खाये'' इस राजय में तो अन्धी पीसे और कुत्ता खाय वाली बात है। ''गरीब की जोरू सबकी भौजाई'' का अर्थ है निर्बल को सब दबाते हैं। गरीब दीनू ने ठाकुर जी की पत्नी को बहन कहा। बहन शब्द सुनते ही

झट से ठाकुर जी दीनु को साला कहने लगे और उसकी पत्नी को साली बना लिया लोगों ने उसकी पत्नी को भौजी कहा। ठीक ही कहा गरीब की जोरू सबकी भौजाई।

''बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद'' का अर्थ है जो किसी वस्तु या व्यक्ति के महत्व को नहीं जाने। उस दिन भगवान प्रलय की कविता को घटिया कहने लगा। सच है। सच है बंदर क्या जाने अदरख का स्वाद।

साँप भी मर जाए, लाठी भी न टूटे–कार्य भी सिद्ध हो और हानि न हो।

''माया तेरे तीन नाम परसु, परसा, परसुराम अर्थात् धनवान का ही मान है''।[v]

''धोबी का कुत्ता घर का न घाट का'' जो न इधर का न उधर का अर्थात् कहीं का नहीं।

''समरथ को नहि दोष गुसाईं–शक्तिशाली व्यक्ति के लिए सब कुछ माफ होता है। इस भाव की द्योतक लोकोक्ति है–''समरथ को नहीं दोष गुसांई, रवि पादक सुरसरि की नाई।''

''न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी''–का मतलब है कि ऐसी शर्त पर काम करना जो पुरी न हो सके। विधि का लिखा मेटनहारा ''होनहार कभी नहीं मिटता।'' सकल तीर्थ कर आई तुमड़िया तो भी न गई तिताई–जन्मगत दोष किसी प्रकार मिटता नहीं। अपनी नाक कटे तौ कटे, दूसरे का सगुन तो बिगड़े–दुष्ट दूसरों के नुकसान के लिए अपना ही नुकसान कर देते हैं। ''मान न मान मैं तेरा मेहमान–जबरदस्ती ही किसी के गले पड़ जाना। गोपाल भोपाल को जानता तक नहीं पर उसके घर मान न मान मैं तेरा मेहमान की तरह आ धमका।

''आप भला तो जग भला, लोकोक्ति का मतलब है कि यदि हम भले हैं तो सारा संसार भला है। ''घर की नारी को कहै, तन की नाड़ी जाहीं ? का मतलब है कि हमारे जीवन में एक दिन ऐसा आता है जब कोई किसी का नहीं होता। घर की नारी (पत्नी) की तो बात ही नहीं तन की पाड़ी भी साथ छोड़ देती है।

''काल करै सो आज कर'' लोकोक्ति का अर्थ है कि आज नहीं तो कल आलसियों का ज्ञान है। जो तुम आज कर सकते हो उसे कल के भरोसे पर कभी नहीं छोड़ना चाहिए। ठीक ही कहा है–काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब, पल में प्रलय होयगी, बहुरि करेगा कब। 'हाथ कंगन को आरसी क्या' का मतलब है कि प्रत्यक्ष वस्तु के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती श्रीमान् जी हाथ कंगन को आरसी क्या ? स्वयं खाकर देख लीजिए आम मीठा है या खट्टा। घाघ एवं भंड्डरी की कुछ कहावतों पर संक्षिप्त विचार प्रस्तुत कर रह हूँ–घाघ के नीति संबंधी विचार पर गौर करें तो कितनी अच्छी बात एक दोहे में कह दी है–

प्रातकाल खटिया ते उठिकै पियै तुरंत पानी।
कबहु घर ना वैद्य आइहै बात घाघ के जानी।।[vi]

अर्थात् जो कोई खाट से उठते ही प्रातः पानी का सेवन करता है वह सदा नीरोग रहता है, पेट की जठराग्नि शान्त रहती है। उसके घर कभी वैद्य नहीं आता।

वह हमेशा स्वस्थ रहती है।
रहे निरोगी जो कम खाय,
बिगरै काम न, जो गम खाय।

अर्थात् जो भूखा होने पर भी समुचित आहार करता है, वह सदा स्वस्थ रहता है और गम खाकर सोच विचार कर अपनी दिनचर्या में रहता है, वह व्यक्ति हमेशा प्रसन्न रहता है। उसका कोई भी काम नहीं बिगड़ता है।

खेतों पाती, बीनती अउ घोड़े की तंग,
आप हाथ संवारियें, लाख लोग होय संग।

जो व्यक्ति खेत में पड़ी हुई पत्तियाँ बिनता है, घोड़े की तंग बिनता है, अनेक आदमियों के संग होने पर भी स्वयं कार्य संपादन में लिप्त रखता है, वह सदा सानंद जीवन यापन करता है।

उत्तर चमकै बिजुरी पूरब बहतो वाउ।
धाध कहे सुन भड्डरी वरदा भीतर लाउ।।

धाध अपनी भगिनी भड्डरी को संकेत कर कहते हैं कि हे भड्डरी सुन, उत्तर की दिशा में यदि बिजली चमकै और पूरब दिशा की ओर हवा का बहाव हो तो अपने जानवरों को छप्पर के नीचे बांध देना चाहिए अर्थात् वर्षा निश्चित होगी।

अतः निःसंदेह कहा जा सकता है कि लोकहितैषी लोकोक्त्यिों का लोकजीवन में बड़ा महत्व है। क्योंकि इसके अनुशीलन से जीवन सुखमय होता है और हम झंझावातों को पार करके सफल जीवन व्यतीत करते हैं।

ग्रंथ सूची

[i] डॉ. प्रताप अनम ''कहावतों की कहानियाँ'' पुस्तक महल, दिल्ली–110006 पृष्ठ आवरण पृष्ठ।
[ii] डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद भारती भवन, पटना–3, पृष्ठ 265 ।
[iii] डॉ. आर. एन. गौड़ राजहंस हिन्दी निबन्ध राजहंस प्रेस, मेरठ पृष्ठ–15 ।
[iv] डॉ. प्रताप अनम, कहावतों की कहानियां, पुस्तक महल, दिल्ली–110006, पृष्ठ–32 ।
[v] वहीं पृष्ठ–33 ।
[vi] छेदी साह, हिन्दी साहित्य की दिशा, 2012, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली।